B.A. पार्ट थर्ड ऑनर्स

Paper - V

Social Psychology

1

Jai Ram Singh.
Deptt of Psychology
Mahila College Dalmianagar Dehri

EMERGENCE OF LEADERSHIP

नेतृत्व के सम्बन्ध में एक जटिल समस्या यह है कि नेता का उद्भव तथा विकास कैसे होता है। उद्भव के सम्बन्ध में दूसरी समस्या यह है कि किन परिस्थितियों में किसी भी व्यक्ति में नेता के रूप में उभरने की संभावना अधिक होती है। किसी भी व्यक्ति को नेता बनाने में क्या केवल उसका अपना शीलगुण सहायक होता है या विशेष परिस्थितियाँ सहायक होती हैं अथवा दोनों सहायक होते हैं। इस सम्बन्ध में WORCHEL व Cooper (1979) ने निम्नलिखित सिद्धांतों का वर्णन किया है।

1. महान मानव सिद्धांत या शीलगुण सिद्धांत → यह सिद्धांत इस विश्वास पर आधारित है कि नेता जन्मजात होता है बनाया नहीं जाता है। व्यक्ति में कुछ ऐसे शीलगुण होते हैं जिनके कारण वह नेता बन जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार नेतृत्व के उद्भव एवं विकास में तीन प्रकार के शीलगुण सहायक होते हैं जो निम्नलिखित हैं।

(1) TERMAN (1904) इस सम्बन्ध में कहा है कि शारीरिक आकार, मजबूती, वजन, आकर्षण, आदि का प्रभाव नेतृत्व के उद्भव पर पड़ता है। अन्य बातें समान रहने पर अच्छे तथा आकर्षक शारीरिक

शीलगुण वाले व्यक्ति के नेता के रूप में उभरने की संभावना अधिक होती है

(2) व्यक्तित्व - शीलगुणों में प्रभुत्व, आत्म संस्थापन, आत्म विश्वास, संवेगात्मक नियंत्रण, अभियोजनशीलता आदि प्रमुख है अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अनुयायियों की अपेक्षा नेता अधिक बुद्धिमान होते है

(3) महान मानव सिद्धांत के अनुसार नेतृत्व के उद्गम एवं विकास में अर्जित शीलगुणों का भी हाथ होता है विशेष रूप से उच्च तथा प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेने वाले बच्चों में निम्न परिवार में जन्म लेने वाले बच्चों की अपेक्षा नेता बनने की सम्भावना अधिक होती है

<u>समूह सिद्धांत या परिस्थिति सिद्धांत</u> → इस सिद्धांत का विकास शीलगुण सिद्धांत के आलोचना के रूप में हुआ था इस सिद्धांत के अनुसार नेतृत्व के Emergence में व्यक्ति के शीलगुणों का हाथ नहीं होता है बल्कि उसमें समूह परिस्थिति की विशेषताओं का हाथ होता है समूह का कौन सदस्य नेता होगा इसका निर्धारण व्यक्ति के शीलगुणों से नहीं समूह की परिस्थितियों से होता है। इस सम्बन्ध में Cooper & McGaugh, 1969 ने कहा है कि यदि हिटलर ने जर्मनी के बदले अमेरिका में अपने सिद्धांत को अपनाया होता है तो उसे जेलखाने में छोड़ दिया जाता या मानसिक संस्थान में रख दिया जाता। नेतृत्व के उद्गम तथा विकास पर

परिस्थिति सम्बन्धित अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है जिनमें प्रमुख निम्नलिखित है।

① समूह का आकार → समूह जब बड़ा होता है तो उसकी क्रियाएं जटिल हो जाती है और कई उपसमूहों का निर्माण होता है प्रत्येक उपसमूह का कोई न कोई नेता बन जाता है इस प्रकार प्राथमिक नेता के साथ-साथ द्वितीयक नेता उभरते हैं अतः समूह का आकार बढ़ने पर कई सदस्यों को नेता बनने का अवसर मिलता है।

② समूह का आकार → जब किसी भी नये समूह का निर्माण होता है तो नेतृत्व के उभरने की संभावना बन जाती है। जब कभी भी संयुक्त परिवार टूट कर एकाकी परिवारों में विभाजित हो जाता है तो प्रत्येक एकाकी परिवार में किसी सदस्य को नेता का प्रधान बनने का अवसर मिलता है।

③ समूह संकट → जब भी किसी समूह में संकट की स्थिति आती है तो ऐसी स्थिति में समूह के पुराने नेता को हटने तथा नये नेता के उभरने की संभावना बन जाती है जिससे समूह के संकट को दूर करने की योग्यता होता है

④ समूह अस्थिरता → कभी कभी समूह के सदस्यों में आपसी मतभेद से समूह विघटित होने लगता समूह का महत्व खतरे में पड़ जाता है और अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तब नये

(4)

नेता बनने की संभावना बढ़ जाती है समूह के सदस्य ऐसे व्यक्ति को नेता चुन लेते हैं जिसे वे आवश्यकता की संतुष्टि करने के योग्य समझते हैं।

(5) वर्तमान नेता की असफलता → जब समूह का वर्तमान [illegible] नेता अपने दायित्व को निभाने में असफल हो जाता है तो उसके स्थान पर नये नेता के उभरने की संभावना अधिक बढ़ जाती है क्योंकि नेता के अनेक कार्य होते हैं जैसे समूह की नीति बनाना, योजना का निर्माण करना, योजना को कार्यरूप देना, सदस्यों को नियंत्रित रखना इत्यादि। जब किसी समूह का नेता इन कार्यों को समुचित रूप से नहीं कर पाता है और समूह का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाता है तो उसकी जगह किसी दूसरे सदस्य को नेता चुन लिया जाता है

(6) नेता की आवश्यकताएँ → जब समूह के किसी सदस्य में नेता बनने की आंतरिक आवश्यकता रहती है तो अन्य सदस्यों की अपेक्षा उसके नेता बनने की संभावना अधिक हो जाती है नेता के रूप में वह प्रतिष्ठा की आवश्यकता आधिपत्य की आवश्यकता अधिकार की आवश्यकता की संतुष्टि करने का प्रयास करता है

(7) समूह की आवश्यकताएँ → समाज सिद्धांत अथवा

परिस्थिति सिद्धांत के अनुसार किसी समूह का नेता कौन होगा यह बात उस समूह की आवश्यकता विशेष पर निर्भर करता है समूह की आवश्यकता बदलने पर नेता भी प्रायः बदल जाता है उदाहरण स्वरूप 1977 में भारत को ऐसे नेता की आवश्यकता थी जिसमें प्रजातांत्रिक मनोवृत्ति प्रधान हो अतः श्रीमती इन्दिरा गाँधी के स्थान पर मोरारजी देसाई को नेता मान लिया गया था। BALES-(1950) ने अपने अध्ययन में पाया कि जिस व्यक्ति ने समूह की समस्याओं के समाधान के सम्बन्ध में सबसे अच्छा विचार दिया उसे नेता माना गया।

इस प्रकार उपरोक्त बातों से स्पष्ट होता है कि नेतृत्व के उद्भव के अनेकों कारकों का सय होता है ~~जिनका~~ जिनमें मुख्य कारकों का वर्णन उपरोक्त पंक्तियों में किया गया है।